परमात्म ऊर्जा

स्वमान और फरमान - दोनों में रहने और चलने के अपने को हिम्मतवान समझते हो? स्वमान में भी सदा स्थित रहें और साथ-साथ फरमान पर भी चलते चलें, इन दोनों बातों में अपने को ठीक समझते हो? अगर स्वमान में स्थित नहीं रहते हैं तो फरमान पर चलने में भी कोई न कोई कमी पड़ जाती है। इसलिए दोनों बातों में अपने आप को यथार्थ रूप से स्थित करते हुए सदा ऐसी स्थिति बनाना। वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग का आप ब्राह्मणों का जो ऊंच ते ऊंच स्वमान है उसमें स्थित रहना है। इस एक ही श्रेष्ठ स्वमान में स्थित होने से भिन्न-भिन्न प्रकार के देह अभिमान स्वतः और सहज ही समाप्त हो जाते हैं। कहाँ-कहाँ सर्विस करते-करते व अपने पुरुषार्थ में चलते-चलते बहुत छोटी-सी एक शब्द की गलती कर देते हैं, जिससे ही फिर सारी गलतियां हो जाती हैं। सर्व गलतियों का बीज एक शब्द की कमज़ोरी है, वह कौन-सा शब्द? स्वमान से 'स्व' शब्द निकाल देते हैं। स्वमान को भूल जाते हैं, मान में आने से फरमान भूल जाते हैं। फरमान है- इसी एक शब्द की गलती होने से अनेक गलतियां हो जाती हैं। फिर मान में आकर बोलना, चलना, करना सभी बदल जाता है। सिर्फ एक शब्द कट होने से जो वास्तविक स्टेज है उससे कट हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में आने के कारण जो पुरुषार्थ व सर्विस करते हैं उसकी रिजल्ट यह निकलती है जो मेहनत ज़्यादा और प्रत्यक्षफल कम निकलता है। सफलतामूर्त जो बनना चाहिए वह नहीं बन पाते और सफलता मूर्त न बनने के कारण व सफलता प्राप्त न होने के कारण फिर उसकी रिजल्ट क्या होती है? मेहनत बहुत करते-करते चलते-चलते थक जाते हैं। उल्लास कम होते-होते आलस्य आ जाता है और जहाँ आलस्य आया वहाँ उनके अन्य साथी भी सहज ही आ जाते हैं।

आलस्य अपने सर्व साथियों सहित आता है, अकेला नहीं आता। जैसे बाप भी अकेला नहीं आता अपने बच्चों सहित प्रत्यक्ष होता है। वैसे यह जो विकार है वह भी अकेले नहीं आते, साथियों के साथ आते हैं। इसलिए फिर विकारों की प्रवेशता होने से कई फरमान उल्लंघन करने कारण स्थिति क्या हो जाती है? कोई न कोई बात का अरमान रह जाता है। न स्वयं सन्तुष्ट रहते, न दूसरों को सन्तुष्ट कर पाते, सिर्फ एक शब्द कट करने के कारण। इसलिए कभी भी अपनी उन्नति का जो प्रयत्न करते हो व सर्विस का कोई भी प्लैन बनाकर प्रैक्टिकल में लाते हो तो प्लैन बनाने और प्रैक्टिकल में लाने समय भी पहले अपने स्वमान की स्थिति में स्थित हो फिर कोई भी प्लैन बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ। स्थिति को छोड़कर प्लैन नहीं बनाओ। अगर स्थिति को छोड़कर प्लैन्स बनाते हो तो क्या हो जाता है? उसमें कोई शक्ति नहीं रहती। बिगर शक्ति उस प्लैन का प्रैक्टिकल में क्या प्रभाव रहेगा? सर्विस तो खूब करते हो, विस्तार बहुत कर लेते हो लेकिन बीज रूप अवस्था को छोड़ देते हो। विस्तार में जाने से सार निकाल देते हो। इसलिए अब सार को नहीं निकालो।

कथा सरिता

ज्ञान राजा बनकर नहीं शिष्य बनकर लें

उस नगर का राजा पढ़े-लिखे नहीं थे, इसलिए उन्हें अच्छा नहीं लगता था। क्योंकि वह सोचते थे कि अगर मुझे पढ़ना आ जाये तो बहुत अच्छा होगा। इसलिए राजा ने सोचा कि मुझे अब से ही यह निर्णय लेना होगा। वह अपने मंत्री को बुलाते हैं उससे बात करते हैं, मंत्री कहता है कि आप चिंता न करें, मैं आपके लिए जल्द ही किसी गुरू का इंतज़ाम करता हूँ।

राजा ने कहा कि वह गुरू बहुत ज्ञानी होने चाहिए। यह सुनकर मंत्री कहते हैं कि आप चिंता न करें, ऐसा ही होगा। मंत्री अच्छे गुरू की तलाश में जाते हैं, यह तलाश दो दिन बाद पूरी होती है। वह गुरू आते हैं वह राजा से कहते हैं कि यह गुरू बहुत ज्ञानी हैं, इन्हें बहुत ज्ञान है। राजा कहते हैं कि इन्हें हमारे महल में ठहरने के लिए पूरा इंतज़ाम किया जाये। अगले दिन गुरू राजा को ज्ञान देने के लिए पढ़ाना शुरू करते हैं।

जब एक महीना बीत जाता है तो राजा को कोई भी ज्ञान नहीं मिल रहा था, वह परेशान थे। क्योंकि गुरू तो उन्हें पढ़ा रहे थे मगर उन्हें कुछ भी नहीं आ रहा था। राजा यह बात गुरू से नहीं पूछ सकते थे क्योंकि वह बहुत ज्ञानी थे। राजा ने यह बात अपनी पत्नी को बताई। उसके बाद पत्नी ने कहा कि यह बात आपको गुरू ही बता सकते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है!

अगले दिन राजा गुरू से पूछते हैं कि आप बहुत ज्ञानी हैं। आपको सभी तरह का ज्ञान है मगर मुझे ज्ञान क्यों नहीं मिल रहा है। यह सुनकर गुरू कहते हैं कि बात बहुत छोटी है मगर इस बात में गहराई छुपी है। मैं आपको बताना चाहता था मगर कह नहीं पाया था। राजा कहते हैं कि आप मुझसे कह सकते हैं। गुरू राजा से कहते हैं कि आप जब भी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं तो आप सिंहासन पर बैठ जाते हैं मुझे नीचे बिठा देते हैं क्योंकि आप राजा हैं यही अंतर है। अब राजा को समझ आ गया था कि जब तक वह बड़े होने का घंमड दूर नहीं करते हैं उन्हें ज्ञान नहीं मिल सकता। उस दिन से राजा ने गुरू को ऊपर का स्थान दिया, अब राजा को सबकुछ धीरे-धीरे आने लगता है क्योंकि उन्हें अब पता चल गया है जीवन में घमंड नहीं करना चाहिए।

भादरा-राज.। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रकांता दीदी, व्यापार मण्डल अध्यक्ष चम्पालाल जी, एम.डी. डॉ. विजय, डॉ. वेदप्रकाश, एक्सईएन दिवासिंग वकील राजेन्दर तथा अन्य।

फर्रुखाबाद-बीबीगंज(उ.प्र.)। त्रिमूर्ति शिव जयंती के कार्यक्रम में केक काटते हुए श्री श्री 1008 स्वामी ईश्वरदास जी ब्रह्मचारी,महंत,दुर्वासा ऋषि आश्रम पांचालघाट, सुरेश गोयल, ब्र.कु. मंजू बहन, डॉ. श्रीमती अनीता यादव,चेयरपर्सन,मेजर एस.डी. सिंह विश्वविद्यालय फर्र., श्रीमती वत्सला अग्रवाल,अध्यक्ष,नगर पालिका परिषद फर्र. तथा गजराज सिंह,एसडीएम।

बिलासपुर-फतेहाबाद। 88वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए कीर्ति खुराना सरपंच,बिलासपुर, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. मदन भाई, ब्र.कु. दलबीर भाई तथा अन्य।

कादरपुर से.63 ए-गुरुग्राम(हरियाणा)। 88वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् समूह चित्र में अंतर्राष्ट्रीय श्री महंत माता प्रेम गिरि जी, केन्द्रीय विद्यालय सीआरपीएफ के प्रधानाचार्य संजय जी, ब्र.कु. सुदेश बहन, ब्र.कु. अंजुला बहन तथा अन्य।

सुंदर नगर-हि.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा महाशिवरात्रि पर आयोजित द्वादश ज्योतिर्लिंगम की भव्य झाँकी व शोभायात्रा का सिविल जज श्रीमती दिव्या ज्योति पटियाल ने हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया। इस मौके पर शहर के अन्य गणमान्य लोग, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शिखा दीदी व बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

मुंगरा बादशाहपुर-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में भाजपा मंडल की प्रभारी अर्चना शुक्ला, महिला मंडल की अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. अनीता दीदी।

आगरा-आर्ट गैलरी म्यूज़ियम। 88वीं शिव जयंती एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में कैप्टन रतन सिंह भदोरिया,आगरा खेल संघ के उपाध्यक्ष एवं एशियाई खेल में एथलेटिक्स में 2 गोल्ड मेडलिस्ट, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. माला बहन, ब्र.कु. संगीता बहन तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

कुराली-पंजाब। 'स्ट्रेस फ्री लाइफ' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. स्वराज बहन एवं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन।